Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ जय बाबा स्वामी ॥

ॐ

|| Whole World is a Family ||

4.3.2019
महाशिवरात्री

"ब्रम्ह" से "परब्रम्ह" तक की यात्रा

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार — — — — —

आज "महाशीवरात्री" के पावन पर्व पर यह एक "विशेष संन्देश" परमात्मा ने आप तक पहुचाने का प्रयास कीया है, इस लीये इसे उतनी ही "संवेदनशीलता" के साथ पढो और "आत्मसात" करो तो ही यह संन्देश प्राप्त होने का और पढ़ने का कोई अर्थ है, "परमात्मा" एक अविनाशी शक्ती है, वह कल भी थी आज भी है और कल भी रहेगी इस वाकय से ही स्थिती स्पष्ट हो जाती है, "परमात्मा" का कोई रुप नही है, न ही कोई भी शरीर "परमात्मा" हो सकता है, और हम जिन रुपो को "परमात्मा" मानते है, वह केवल हमारा भाव है,

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

यह भाव प्रत्येक मनुष्य का अलग२ हो सकता है। और
है, यहाँ तक की पति पत्नी का भी अलग२ होता
है।

हम जिस प्रकार से मिट्टी से ही अलग२ देवताओं की
मुर्तीया बनाते है, जब की मीट्टी तो एक ही होती है,
व हम उसी एक मिट्टी से अलग२ रुप बनाते है,
बिलकुल ठीक ऐसा ही हम अपने चित्त से कीसी भी
रुप को परमात्मा मानने लग जाते है, लेकीन "सत्य"
यह है, की "परमात्मा" निराकार है, परमात्मा कोई रुप
रंग नही है, जिस प्रकार से छोटे बच्चे को "अ" अनार
का ऐसा अनार का फोटो दिखाकर सिखाया जाता
है, लेकीन बच्चा बडा होकर समझ जाता है, "अ"
केवल अनार का नही होता "अ" से अन्य कई अक्षर
बनते है, वह "अनार" तो बचपन मे केवल सीखाने के
लिये दिखाया गया था अनार का रुप तो केवल "अ"
को सिखने के लीये था ठीक ऐसा ही परमात्मा का
कोई भी "रुप" या "आकार" तो केवल परमात्मा तक
पहुंचने का "माध्यम" होता है, कोई भी रुप परमात्मा
नही होता है, परमात्मा एक विश्वव्यापी चैतन्य
शक्ती होती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

उस विश्वव्यापी चैतन्य शक्ती को किसी एक रुप मे "बांधा" ही नही जा सकता है, वास्तव मे तो रुप के माध्यम से स्वरुप तक की यात्रा करना होती है, लेकीन मनुष्य "रुप" को ही पकडकर बैठ जाता है, "अ" को समझने की जगह अनार को ही जिवनभर पकड कर रखता है।

इस लीये पहले समझ लो की अगर "आध्यात्मीक प्रगती" सचमुच करने की आप की इच्छा है, और आप सचमुच करना चाहते हो तो कोई "रुप" को पकडकर मत बैठो अगर अनार के रुप को ही पकडकर बैठे तो कभी "अ" को समझ नही पाओगे क्योंकी अनार रुप होता है, पर भीतर का "अ" स्वरुप होता है,

आप जिन रुपो को "परमात्मा" मानते हो उन्होने ने भी कभी अपने आप को परमात्मा नही कहा क्योंकी वे परमात्मा एक विश्वचैतन्य शक्ती है, यह जानते थे इसी लीये आजतक किसी भी रुप ने नही कहा की मै परमात्मा हुँ, उन्होने ने जो जिवनभर कभी नही कहा बस आप मानते हो और मानना भी अनार से "अ" तक पहुचने की यात्रा हो तो भी बात समझ मे आती है,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

आप तो जिवन मे अनार को ही पकडकर बैठ गये
अरे बाबा अनार "अ" नही है. जागो और इस बात
को समझो और जिवन मे आगे बढो
हम जिवन मे देखते है, की "सुरज" एक ही है, पुरे
विश्व मे सुरज एक ही है, और पुरे विश्व मे वह
समान रुप से अपनी उर्जा अपनी किरणो के माध्यम
से देता है, किसी भी प्रकार का भाषा, जाती, धर्म, देश
लींग रंग का भेदभाव नही करता है, "सुरज" एक है, पर
सुरज की कीरणे करोडो मे है, और सुरज की प्रत्येक
किरणे भी प्रकाश देती है, सुर्य भी प्रकाश देता है,
और ठिक किरणे भी प्रकाश देती है, सुर्य भी अविनाशी
है, और किरणे भी अविनाशी है, सुर्य भी उर्जा देता
है, सुर्य किरणे भी उर्जा देती है, सुर्य भी नवजिवन देता
है, सुर्य किरणे भी नवजीवन देती है, याने सुर्य के जो-
अच्छे "गुण" है, वह सभी सुर्यकिरण मे भी होते ही
है, लेकीन फिर भी सुर्य सारे विश्व मे एक ही है,
और सुर्यकिरण विश्व मे करोडो की संख्या मे है,
लेकीन कोई सुर्य किरणे "सुर्य" नही है, सुर्य सदैव-
"सुर्य" है, और सुर्यकिरणे सदैव ही सुर्य किरण है
यह अंन्तर सदैव बना रहता है, और रहेगा,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

अब इसी तरह परमात्मा को भी समझ लो सारे विश्व मे "परमात्मा" एक ही है, और सारे विश्व को एक सुर्य के समान उर्जा देते रहता है,

सुर्य विश्व मे एक ही है, लेकीन सुरज की किरणे करोडो मे होती है, ठीक वैसा ही परमात्मा तो सारे विश्व मे एक ही है, पर आत्मा तो करोडो की संख्या मे है, अगर "परमात्मा" को सुरज समझे तो "आत्मा" को सुरज की किरणे समझना चाहीये और जिस प्रकार से सुरज की किरण मे भी सुरज के गुण विद्यमान होते है, ठीक वैसे ही प्रत्येक आत्मा मे परमात्मा के "गुण" विद्यमान होते ही है।

लेकीन यह गुण हमे उस आत्मा मे नजर आते है, जो आत्मा अपने "मुलस्वरुप" मे हो जिस पर शरीर का केवल आवरण चढा है, पर शरीर के आवरण का भाव उस पर हावी न हो ऐसी पवीत्र और शुद्ध आत्मा मे परमात्मा के सभी गुण सभी ज्ञान सभी शक्तीया विद्यमान होती ही है, ऐसी आत्माओ ने शरीर तो धारण किया होता है, पर शरीरभाव नही होता है, यह आत्मा अपने मुल स्वरुप मे होने के कारण परमात्मा की "चैतन्य शक्तीया" इनके शरीर से बहते ही रहती है। और वह सभी को महसुस भी होती है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

ऐसी आत्माएँ तो साक्षात "ब्रह्म स्वरूप" ही रहती है, इनके माध्यम से ब्रह्म हम तक पहुँचता है। ब्रह्म की अनुभूति होने पर मनुष्य को ही नहीं पशु पक्षीयो को भी अच्छा लगता है,

इसी लीये "गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवो महेश्वरा" यह "सद्गुरु" के लीये कहा जाता है। सद्गुरु वह "माध्यम" है, जिसके "माध्यम" से हम परब्रह्म तक की यात्रा कर सकते है, ब्रह्म तो आत्मा है, और परब्रह्म परमात्मा होता है।

"सद्गुरु" को ऐसा इसलीये कहा गया है, क्योकी वह ब्रह्म का साक्षात रुप होता है, उसके भितर सदैव चैतन्य के रुप मे "ब्रह्म" प्रगट होते ही रहता है, "सद्गुरु" अपने जिवन काल मे आनेवाली आत्माओ को वह क्या है, और उन्होने क्यो शरीर धारण कीया है, यह ज्ञान भी देते ही रहता है।

जिस प्रकार से सुरज से निकली हुयी प्रत्येक किरण का उद्देश सुरज के "गुणो" को विकसीत करना और सुरज के गुणो को फैलाना ही है, बिलकुल ठिक ऐसा ही प्रत्येक आत्मा जो परमात्मा से अलग होकर प्रथ्वी पर आती है, उसका उद्देश भी परमात्मा के गुणो को विकसीत करना व फैलाना ही होता है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

अब हम परमात्मा के "गुण" क्या क्या है, वह देखेगे और प्रत्येक आत्मा का उद्देश परमात्मा के गुणो को ही विकसीत करना व फैलाना है,

(1) **समानता -:** परमात्मा का पहला गुण है, वह सभी को "समान" भाव से देखता है, भाषा जाती धर्म, देश रंग, लींग, आदी किसी भी बात का भेदभाव नही करता है,

(2) **प्रेम -:** परमात्मा सभी को प्रेम करता है, कोई व्यक्ती भगवान को माने तो भी और न माने तो भी वह सभी को "निव्याज प्रेम" समान रुप से करता है,

(3) **दयाभाव -:** परमात्मा दयालु है, आप कीतनी भी भुले करो कीतनी भी गलतीया करो वह आप की सभी गलतीयो को क्षमा करता है, और आप पर सदा "दया" करता है, इसी लीये उसे करुणानीधान कहते है,

(4) **सुरक्षा -:** परमात्मा सदैव सभी को ही सुरक्षा-प्रदान करते रहता है, वो बात अलग है की कई "नादान" उसके सुरक्षा घेरा को तोड कर अपने आप को "असुरक्षीत" कर लेते है अपने पुर्व कर्मो से-ऐसा होता है

(5) **आंनद -:** परमात्मा के सानीध्य मे आत्मा को सदैव ही आत्मानंद-प्राप्त होते रहता है, इसी लीये आत्मा को उसके सानीध्य मे ही रहने की इच्छा होती है। वह सदैव ही परमात्मा के सानीध्य मे आंनद और प्रसन्नता महसुस करती है,

(6) असीम शान्ती —: परमात्मा सबसे बडा गुण है, की उसके सानीध्य मे आत्मा को "असीम शान्ती" का अनुभव होता है, और यह "आत्मशान्ती" उसको उसके ही भितर से प्राप्त होते रहती है,

(7) आत्मसमाधान —: प्रत्येक आत्मा का संपुर्ण समाधान जो तभी होता है, जब आत्मा परमात्मा का सानीध्य प्राप्त करती है, और फिर जिवन का सार्थक हो गया यह भाव निर्माण हो जाता है,

(8) परमात्मा की अनुभुती —: परमात्मा का दर्शन भी परमात्मा की अनुभुती कराता है, यह वह आत्मा होती है, जो परमात्मा के मुक्त स्वरुप की अनुभुती कराती है, इसी लीये उसे सदगुरु कहते है।

(9) मार्गदर्शक —: परमात्मा एक अच्छा मार्गदर्शक है, उसके सानीध्य मे आकर प्रत्येक आत्मा की "अन्तरमुखी" यात्रा प्रारंभ होती है, और आत्मा को किस दिशा मे यात्रा करनी है, इसका मार्गदर्शन प्राप्त होता सर्वप्रथम आत्मा को शरीर के दोश और शरीर भाव से मुकती मीलती है, आत्मा के भितर उसका मुलभाव आत्मभाव जाग्रत होता है, और आत्मा की अंन्तरमुखी यात्रा प्रारंभ हो जाती है, आज तक जो आत्मा परमात्मा को दुनीयाभर मे खोजते रहती है, वह शरीर के भितर ही है, यह "आत्मज्ञान" होता है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ जय बाबा स्वामी ॥

|| Whole World is a Family ||

उपरोक्त परमात्मा के गुण होते है, और जो भी आत्मा अपने मुल स्वरूप मे रहती है। उस आत्मा मे यह गुण हमे नजर आते है,

और प्रत्येक आत्मा का भी शरीर धारण करने का उद्देश। परमात्मा के "गुणो" का विकास करना व उन्हे फैलाना होना है पर आत्मा शरीर धारण करने के बाद अपने शरीर को धारण करने का मुख्य "उद्देश" ही भुल जाती है, और अपने आप को आत्मा न समझ कर शरीर समझने लग जाती है, तो फीर उस आत्मा मे शरीर के ही "दोष" निर्माण होना प्रारंभ हो जाते है लेकीन ऐसी "दिव्य आत्माऐ" जिन्होने शरीर तो जिस उद्देश से धारण किया है, उसी "मुख्य उद्देश" को जिवनभर याद रखती है, तो ऐसी आत्माएँ समाज मे अपना अलग ही प्रभाव डालती है, और इन्होने अपने जिवन के मुख्य उद्देश को पकडा रहना है, इसी लीये इनमे भी परमात्मा के सभी गुण प्रगट होने लग जाते है, और वे गुण इतनी बडी संख्या मे प्रगट होते है, की लोग फीर उसे ही "परमात्मा" मानने लग जाते है,

लेकीन यहा समझने का है, ये भी परमात्मा नही होते परमात्मा के "माध्यम" होते है, ये शुध्द व पवीत्र स्वरूप मे रहते है, इस लीये हमे इनके सानिध्य मे "परमात्मा" ये ही है, यह लगता है।

॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

हमें लगता है, पर वे भी परमात्मा के "माध्यम" ही होते है, परमात्मा ने आत्मा को अपने गुणों का प्रसार करने के मुख्य उद्देश से ही भेजा होता है, और सभी आत्माओं को समान ऊर्जा शकती दी हुयी होती है,

पर जो दिव्य आत्मायें इस मुल उद्देश को याद रख पाती है, वही आत्मायें परमात्मा का "माध्यम" बन जाती है, ऐसी एक आत्मा हिमालय नेपाल मे मुझे शिवबाबा के रुप मे मीली और मन के पुर्ण भाव से मैंने उन्हे ही "परमात्मा" मानलीया परमात्मा मानना मनुष्य के गुणग्राहकता की परमसीमा है, और उनके ही चरणो पर चित्त रख जिवन मे "आध्यात्मीक प्रगती" कर पाया वे ऐसी दिव्य आत्मा थे जिनके शरीर से परमात्मा का "चैतन्य" ब्रम्ह के रुप मे प्रगट होते ही रहता था और ऐसी ब्रम्ह पर चित्त रख कर जिवन मे "परब्रम्ह" की प्राप्ती हो सकी है, और ऐसा ही दिव्य आत्मा का "माध्यम" आपके भी जिवन मे आये और आप सभी की आध्यात्मीक प्रगती हो यही "परमात्मा" से प्रार्थना है, आप सभी को खुब खुब आर्शीवाद

आपका अपना
बाबास्वामी
4/3/2015